

Find a partner from
your caste.

हिन्दुस्तान

मंगलवार , 29 जुलाई , 2008 | 20:49 IST



हिन्दी फॉन्ट

मेरे लिंक

[हिन्दुस्तान](#) » [संपादकीय](#) » [आलेख](#) » [समाचार](#)

आज का अखबार

- दिल्ली संस्करण
- पटना संस्करण
- लखनऊ संस्करण
- रांची संस्करण
- सामग्री कोष

समाचार

- शहर
- राज्य
- देश
- विदेश
- खेल
- बिजनेस
- संपादकीय
- स्वास्थ्य
- भविष्यफल
- सिनेमा

पत्रिकाएं

- नई दिशाएं
- मेट्रो रिमिक्स
- फेस्ट
- हम तुम

पाठक

- रजिस्टर
- लॉगिन

लिंक भेजें | प्रिंटर योग्य

ब्लॉग वार्ता : विकल्प की एक जमीन

रवीश कुमार

हिन्दी के तमाम ब्लॉगों में समतावादी जनपरिषद ही ऐसा ब्लॉग है जो इंटरनेट की जमीन से वैश्वीकरण की आर्थिक विचारधारा का मुकाबला कर रहा है। इसका पता

है: <http://samatavadi.wordpress.com> और विरोधी हैं अफलातून। गांधीवादी। क्या आज लोगों की इस बात में दिलचस्पी होगी कि अमेरिका में 20 वर्ष पहले कोक की तुलना में दूध की खपत दुगुनी थी। अब कोक की खपत दूध से दुगुनी है। यह दलील यह समझाने के लिए कि उपभोक्ता संस्कृति क्या है और कोक का असर क्या है, क्योंकि कनाडा में बहस चल रही है कि स्कूलों को जंक फूड से कैसे मुक्त कराया जाए।

हिंदुस्तान में इस तरह की बातें लालू यादव की कोक बनाम कुल्हड़ में लस्सी जैसी बातों से हवा उड़ जाती है। इस ब्लॉग पर कनाडा की माड बालों का लेख है। बालों कनाडा में पानी के निजीकरण के खिलाफ आंदोलन चलाती हैं। उनका लेख कहता है कि दुनिया में ताजे पानी की कमी हो गई है। वर्ष 2025 में विश्व की आबादी आज से 2.6 अरब अधिक हो जाएगी। इस आबादी के दो-तिहाई लोगों के समक्ष पानी का गंभीर संकट होगा तथा एकतिहाई के समक्ष पूर्ण अभाव की स्थिति होगी।

तब पानी की उपलब्धता से 56 फीसदी ज्यादा की मांग होगी। और यही बढ़ती हुई मांग दुनिया भर में पानी को नीला सोना बना रही है। विश्व बैंक कहता है कि पानी का उद्योग एक खरब का हो गया है और सरकारों पर दबाव बनाया जा रहा है कि पानी का निजीकरण जल्द से जल्द करें। एक ऐसे समय में जब प्रमुख वामपंथी दलों को सत्तावादी और समय के सांचे में फंस गए कल्पनावादी कह कर खारिज किया जा रहा है समतावादी जनपरिषद के इस ब्लॉग पर इस तरह की वैकल्पिक बातें परशान करती हैं।

अब इस बात को पाठक क्यों स्वीकार करें लेकिन गगन प्रताप का यह लेख टेक्ना बाबू का उदय काफी दिलचस्प है। भारत जिस किस्म की सूचना टेक्नोलॉजी (आईटी) में लगा है उसे राजेश कोचर ने 'सूचना छेड़छाड़' की संज्ञा दी है। 'यदि आईटी को हम एक नई साइकिल डिजाइन करने जैसा मानें, तो भारत को जो काम सौंपा गया है वह मात्र पंचर जोड़ने का है।' आईटी क्रांति नहीं बल्कि कुलीकरण है।

देश के होनहार युवा बंगलुरु में बैठ कर अमेरिकी बैंकों का बहीखाता पढ़ते हैं तो वो एक तरह से टेक्नो कुली का ही काम कर रहे हैं। इस लेख की प्रतिक्रिया में ब्लॉगर घुघुती बासुती लिखती हैं कि इसे पढ़कर युवा परशान हो जाएगा। हकीकत यह है कि भारत का युवा इसे किसी समाजवादी, गांधीवादी और समतावादी मान कर खारिज कर देगा। इतिहास यही है। भारत के ब्रिटिश काल में बाबूवाद

Advertisement



विशेष परिशि

- करार पर
- रेल बजट
- ये इंडिया
- भावनाएं :
- गठबंधन
- चार दिन
- राम नाम

ताजा समाच

- अमेरिका में कैद की सज
- चीन में बस मरे »

देश समाचा

- आतंक का : में भी »
- हमेशा के रि सुर »
- सिमी ने मां »
- फिल्में देख »
- फेडरल एजें »

अन्य समाच

- राजनीति की

को खत्म नहीं किया बल्कि पालपोस कर बरकरार रखा है। आईटी क्रांति की यह आलोचना कोई नया विकल्प तो नहीं देती लेकिन हकीकत को देखने का चश्मा तो देती है।

भारत के बेरोजगारों को सिर्फ नौकरी से मतलब है। भारत का बेरोजगार नौजवान नर्मदा बांध को बनाने में काम आता है और टिहरी बांध को भी। बहुत कम होते हैं जो छोड़कर आंदोलन के पक्ष में खड़े होने का साहस करते हैं। यह सिर्फ एक ब्लॉग नहीं एक राजनीतिक दल भी है। समतावादी जनपरिषद भारत के चुनाव आयोग में पंजीकृत है। यह वैश्वीकरण को राजनैतिक प्रतिक्रांति मानता है। एक राजनैतिक संस्कृति की स्थापना इसका प्रमुख राजनैतिक लक्ष्य है। हिंदी प्रदेश के पन्नों पर अब वैकल्पिक बातों की जगह नहीं बची है।

इसलिए विकल्प की बातें अब ब्लॉग पर पहुंच गई हैं। लेकिन इन्हीं सवालों से जूझता हुआ इसी ब्लॉग पर एक लेख है। चिट्टे इंकलाब नहीं लाते। उन लोगों के विचार हैं जो मानते हैं कि जिस तरह बम और बंदूक से इंकलाब नहीं आता उसी तरह ब्लॉगिंग से इंकलाब नहीं आ सकता। सेथ फिंकलस्टीन के लेख में कहा जा रहा है कि- दमनकारी सरकारों द्वारा सेन्सरवेयर (सामग्री को सेन्सर करने वाले सॉफ्टवेयर) का इस्तेमाल अब वैधानिक नीति का हिस्सा बन चुका है।

लेख की दलील है कि ब्लॉग कोई हल नहीं है। अत्यंत विरले जो ब्लॉग्स के जरिए ठोस असर डालने में कामयाब हो जाते हैं- उनकी कहानी को व्यापक तौर पर 'सक्सेस स्टोरी' के तौर पर प्रचार मिलता है। एक छोटे से प्रशंसक पाठक वर्ग की दायर के बाहर कभी पढ़े नहीं जाते हैं। अगर वोट देने का मन न भी हो तो भी समतावादी जनपरिषद के लेखों को पढ़ने में कोई बुराई नहीं। आखिर जब तक ब्लाग की ताकत पर बहस पूरी नहीं हो जाती तब तक क्यों न इस पर मिल रही जानकारियों का मजा लिया जाए।

लेखक का ब्लॉग है naisadak.blogspot.com

खोज एवं सामग्री कोष

पुराने अंक 1 अप्रैल, 2004 से उपलब्ध हैं।

- सामग्री कोष में खोज हेतु [क्लिक करें](#)।
- विस्तार से खोज के लिए [क्लिक करें](#)।

अपने विचार व्यक्त करें

क्या आप इस बारे में अपनी राय और विचार अभिव्यक्त करना चाहेंगे? अपनी राय हिन्दुस्तानदैनिक.कॉम पर प्रकाशित करने हेतु [यहां क्लिक करें](#)।

हिन्दुस्तानदैनिक.कॉम, सर्वाधिकार सुरक्षित
इस साइट के बारे में अपने विचार हमें वेब द्वारा भेजने के लिए [यहां क्लिक करें](#) अथवा feedback@hindustantimes.com पर ईमेल करें। इस साइट पर विज्ञापन देने हेतु pooja.puri@hindustantimes.com पर ईमेल करें।

मोर्चा »

● गुजरात : दं
के सिर »

यदि आ
पढ़ने में
रही है
दिखाई न
यहां

सिनेमा



'विकट्री' में ह



X